REACH Lilly MDR-TB Partnership Media Fellowship Programme

2012-13 FELLOW : VIVEK SHUKLA

Vivek Shukla *is based in Kanpur in Uttar Pradesh and is currently feature health-page Incharge at Dainik Jagran (for eleven states across India). In the last eight years Vivek has held this position, he has written over 750 stories and articles on different aspects of health. Vivek has won nine prestigious awards, including the best Health writer (Hindi), awarded in 2008 by then Health Minister Anbumani Ramadoss.*

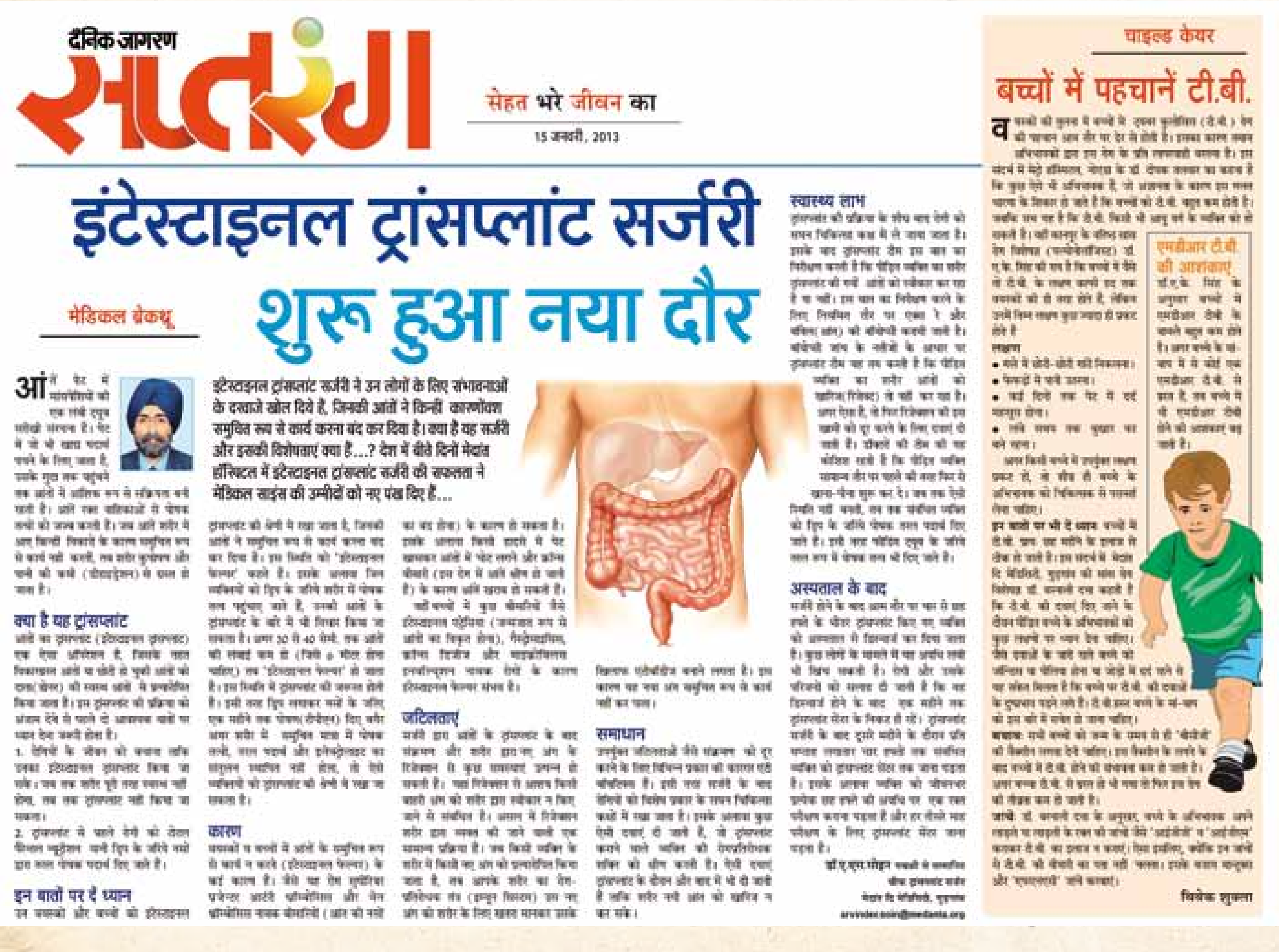

दैनिक जागरण सप्तरंग

सेहत भरे जीवन का

15 जनवरी, 2013

इंटेस्टाइनल ट्रांसप्लांट सर्जरी शुरू हुआ नया दौर

मेडिकल ब्रेकथ्रू

इंटेस्टाइनल ट्रांसप्लांट सर्जरी ने उन लोगों के लिए संभावनाओं के दरवाजे खोल दिये हैं, जिनकी आंतों ने किन्हीं कारणोंवश समुचित रूप से कार्य करना बंद कर दिया है। क्या है यह सर्जरी और इसकी विशेषताएं क्या हैं...? देश में बीते दिनों मेदांता हॉस्पिटल में इंटेस्टाइनल ट्रांसप्लांट सर्जरी की सफलता ने मेडिकल साइंस की उम्मीदों को नए पंख दिए हैं...

क्या है यह ट्रांसप्लांट

इन बातों पर दें ध्यान

कारण

जटिलताएं

समाधान

स्वास्थ्य लाभ

अस्पताल के बाद

चाइल्ड केयर

बच्चों में पहचानें टी.बी.

एमडीआर टी.बी. की आशंकाएं

विवेक शुक्ला

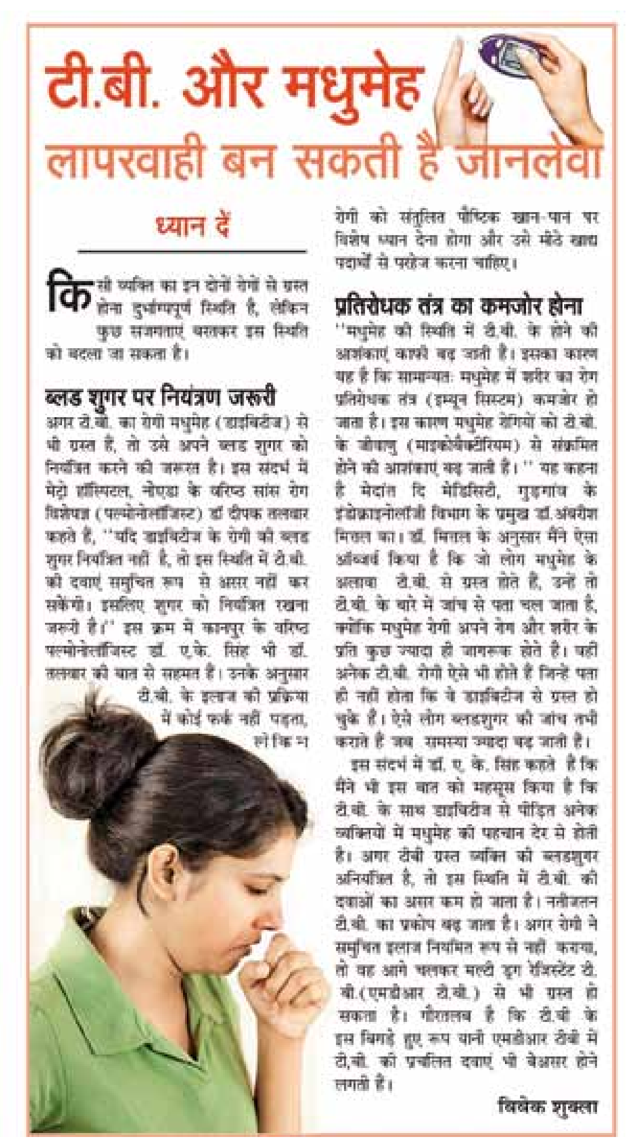

टी.बी. और मधुमेह लापरवाही बन सकती है जानलेवा

ध्यान दें

किसी व्यक्ति का इन दोनों रोगों से ग्रस्त होना दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है, लेकिन कुछ सजगताएं बरतकर इस स्थिति को बदला जा सकता है।

ब्लड शुगर पर नियंत्रण जरूरी

अगर टी.बी. का रोगी मधुमेह (डाइबिटीज) से भी ग्रस्त है, तो उसे अपने ब्लड शुगर को नियंत्रित करने की जरूरत है। इस संदर्भ में मेट्रो हॉस्पिटल, नोएडा के वरिष्ठ सांस रोग विशेषज्ञ (पल्मोनोलॉजिस्ट) डॉ दीपक तलवार कहते हैं, ''यदि डाइबिटीज के रोगी की ब्लड शुगर नियंत्रित नहीं है, तो इस स्थिति में टी.बी. की दवाएं समुचित रूप से असर नहीं कर सकेंगी। इसलिए शुगर को नियंत्रित रखना जरूरी है।'' इस क्रम में कानपुर के वरिष्ठ पल्मोनोलॉजिस्ट डॉ. ए.के. सिंह भी डॉ. तलवार की बात से सहमत हैं। उनके अनुसार टी.बी. के इलाज की प्रक्रिया में कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि म

रोगी को संतुलित पौष्टिक खान-पान पर विशेष ध्यान देना होगा और उसे मीठे खाद्य पदार्थों से परहेज करना चाहिए।

प्रतिरोधक तंत्र का कमजोर होना

''मधुमेह की स्थिति में टी.बी. के होने की आशंकाएं काफी बढ़ जाती हैं। इसका कारण यह है कि सामान्यतः मधुमेह में शरीर का रोग प्रतिरोधक तंत्र (इम्यून सिस्टम) कमजोर हो जाता है। इस कारण मधुमेह रोगियों को टी.बी. के जीवाणु (माइकोबैक्टीरियम) से संक्रमित होने की आशंकाएं बढ़ जाती हैं।'' यह कहना है मेदांता दि मेडिसिटी, गुड़गांव के इंडोक्राइनोलॉजी विभाग के प्रमुख डॉ. अंबरीश मित्तल का। डॉ. मित्तल के अनुसार मैंने ऐसा ऑब्जर्व किया है कि जो लोग मधुमेह के अलावा टी.बी. से ग्रस्त होते हैं, उन्हें तो टी.बी. के बारे में जांच से पता चल जाता है, क्योंकि मधुमेह रोगी अपने रोग और शरीर के प्रति कुछ ज्यादा ही जागरूक होते हैं। वहीं अनेक टी.बी. रोगी ऐसे भी होते हैं जिन्हें पता ही नहीं होता कि वे डाइबिटीज से ग्रस्त हो चुके हैं। ऐसे लोग ब्लडशुगर की जांच तभी कराते हैं जब समस्या ज्यादा बढ़ जाती है।

इस संदर्भ में डॉ. ए. के. सिंह कहते हैं कि मैंने भी इस बात को महसूस किया है कि टी.बी. के साथ डाइबिटीज से पीड़ित अनेक व्यक्तियों में मधुमेह की पहचान देर से होती है। अगर टीबी ग्रस्त व्यक्ति की ब्लडशुगर अनियंत्रित है, तो इस स्थिति में टी.बी. की दवाओं का असर कम हो जाता है। नतीजतन टी.बी. का प्रकोप बढ़ जाता है। अगर रोगी ने समुचित इलाज नियमित रूप से नहीं कराया, तो वह आगे चलकर मल्टी ड्रग रेजिस्टेंट टी.बी.(एमडीआर टी.बी.) से भी ग्रस्त हो सकता है। गौरतलब है कि टी.बी. के इस बिगड़े हुए रूप यानी एमडीआर टीबी में टी.बी. की प्रचलित दवाएं भी बेअसर होने लगती हैं।

विवेक शुक्ला

REACH

SPEAK UP TO STOP TB

the Lilly MDR-TB partnership